

यह हम सब जानते हैं कि भारतीय उपमहाद्वीप एक दिन में गुलाम नहीं बना और न ही इसे अंग्रेजों ने किसी युद्ध में जीता। कुछ भूलें हमसे हुयीं हैं जिनको यदि हम पहचान कर उनका समाधान करते हैं तो निश्चित ही आपका और मेरा देश भारत पुनः विश्व महाशक्ति बन सकेगा। प्रस्तुत लेख [भाई राजीव दीक्षित जी](#) के एक भाषण का लिखित स्वरूप है जिसमें मुख्य बिंदुओं की संक्षेप में चर्चा की गई है। इस तथा आने वाले लेखों का उद्देश्य भारतवासियों में अपनी भूली हुई संस्कृति एवं स्वाभिमान को पुनर्जागृत करना है। मैं आशा करता हूँ कि आप इसे पूरा पढ़ेंगे और अपने राष्ट्र के उत्थान में अपना यथासंभव योगदान प्रदान करेंगे।

जय भारत!

https://docs.google.com/file/d/0B8n_36gK-KF4RjI2OXdmTndMSDQ/edit?usp=sharing

दुनिया में सबसे सफल वे सभ्यताएं हुई हैं जिन्होंने अपनी भूलों को सुधारा है। जिन सभ्यताओं ने अपनी भूलों को सुधारकर उनसे सीख ली वे ही आज जीवंत सभ्यताएं हैं। दुनिया में कई सभ्यताएं आयीं और चली गयीं परंतु भारतीय सभ्यता अभी भी जीवित है और शायद इसीलिए कि हमने समय-समय पर अपनी भूलों को सुधारा है।

वर्तमान समय की अगर हम बात करें तो आज़ादी के 65 वर्षों में जो सबसे बड़ी भूल हमसे हुई वो यह कि हमने आज़ादी से एक दिन पहले भारत का बंटवारा स्वीकार कर लिया। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि जिस अलग देश की demand पर मुहम्मद अली जिन्नाह अड़े हुए थे उस demand का भारत के मुसलमानों ने बहिष्कार कर दिया था। वे सभाओं में जाकर लोगों को भड़काता था और कहता था कि उन्हें अलग देश बनाना चाहिए। ऐसी सभाओं में जिन्नाह का स्वागत जूतों की माला से किया जाता था, लाहौर की एक ऐसी ही सभा इसका उदहारण है। वास्तव में बंटवारा जिन्नाह को नहीं, अंग्रेजों को चाहिए था। अंग्रेजों ने जिस किसी भी देश पर शासन किया उस देश को मनमर्जी से बाँटा। यदि आप अफ्रीकी देशों के मानचित्र को देखें तो पाएंगे कि किस तरह सीधी रेखाओं से उन देशों को बाँटा गया है बिना किसी आधार के। यही हाल अमरीका और कनाडा का भी है जो अंग्रेजों के गुलाम रहे। अंग्रेज़ तो भारत के 565 टुकड़े रियासतों के आधार पर करना चाहते थे परंतु लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल जी ने उनके मंसूबों पर पानी फेर दिया। अगर जिन्नाह अंग्रेजों के बहकावे में न आता तो पाकिस्तान भी कभी न बनता। भारत के बुद्धिजीवी मुसलमान, मौलाना आज़ाद और बदरुद्दीन तैय्यब जी जैसे लोग ये जानते थे कि धर्म के आधार पर यदि कोई अलग देश बना तो उसकी स्थिरता और सम्पन्नता पर प्रश्नचिन्ह लग जाएगा। वर्तमान पाकिस्तान के हालात विश्व से

छुपे हुए नहीं हैं जो गरीबी और आतंकवाद की दोहरी मार झेल रहा है! सरदार पटेल ने अपनी चतुराई शक्ति के बल पर 565 रियासतों का विलय भारत गणराज्य में कर दिया। जब अंग्रेजों ने देखा की भारत की लगभग सभी छोटी बड़ी रियासतें एकजुट हो रही हैं तो उन्होंने जिन्नाह को पकड़ा सांप्रदायिक बँटवारे के लिए। चूँकि जिन्नाह की परवरिश और उसकी सोच काफी पाश्चात्य थी, इसीलिए वह अंग्रेजों के चंगुल में फँस गया। तत्कालीन अंग्रेजी अखबारों में जिन्नाह की सभाओं के चर्चे जोरों शोरों से होते थे परंतु इतने पर भी उसे भारत के मुस्लिम समाज का समर्थन प्राप्त नहीं हुआ। इसके लिए अंग्रेजों को एक नयी चाल सूझी और उन्होंने बिहार और बंगाल के मुसलमानों को खरीदना शुरू किया। इसी भीड़ की एक पैदाईश था बंगाल का नेता सोहरावरदी जिसने जिन्नाह की मांग का समर्थन किया। यह कहानी आवश्यक है हमारे लिए अंग्रेजों के बारे में अपनी समझ पैदा करने के लिए।

प्रथम विश्व युद्ध के बाद अंग्रेजों की हालत बहुत खराब हो चुकी थी। एक तरह से उन्हें अब भरोसा हो चला था कि अब भारत में से भी उनका शासन खत्म होने वाला है। लेकिन जाने से पहले वो चाहते थे कि भारत के टुकड़े हो जायें इसके लिए उन्होंने जिन्नाह को भड़काना शुरू किया। इसके साथ साथ उन्होंने उसकी एक पार्टी बनाने में भी मदद की जिसका नाम था मुस्लिम लीग। एक दिन जिन्नाह गाँधी जी से मिलने आया तो गाँधी जी ने उससे पूछा कि उसे क्या चाहिए? उसने कहा कि वह प्रधानमंत्री बनना चाहता है जिसके लिए वह एक अलग देश बनाएगा। गाँधी जी ने कहा कि देश के मुसलमान तो तुम्हारे साथ नहीं हैं फिर तुम किसके लिए अलग देश की मांग कर रहे हो? उन्होंने कहा कि अगर उसे प्रधानमंत्री ही बनना है तो भारत का बन जाए कम से कम देश तो एक ही रहेगा। इस बात पर जिन्नाह सहमत भी हो गया पर इसी बीच यह सुनकर भारतीय प्रधानमंत्री के दूसरे उम्मीदवार जवाहर लाल नेहरू ने एक ऐसी बात कह डाली जिसने भारत की दिशा ही बदल दी, उन्होंने कहा “जिन्नाह को तो मैं अपने कैबिनेट के दफ्तर का चपरासी न बनाऊं फिर प्रधानमंत्री तो बहुत दूर की बात है!” यह बात जिन्नाह के मन को चुभ गई और उसने कहा कि अब तो पाकिस्तान बन कर रहेगा फिर चाहे कुछ भी हो जाए! इसके बाद वो गाँधी जी से फिर कभी मिलने नहीं आया और नए देश की तैयारी में जुट गया। इस एक कड़वी सी बात ने 10 लाख लोगों की जानें लीं जो कि विश्व के सबसे बड़े नरसंहारों में से एक है। जिन्नाह के डॉक्टर ने कई बार यह सुझाव दिया था कि जिन्नाह अधिक दिनों तक जीवित नहीं रहने वाला तो उसे आप प्रधानमंत्री बनने दें लेकिन किसी ने उसकी बात नहीं मानी। और हुआ भी यही, पाकिस्तान के निर्माण के कुछ ही महीनों के बाद जिन्नाह चल बसा! आप अंदाज़ा लगा सकते हैं कि एक छोटी सी गलती कितने बड़े दुष्परिणाम दे सकती है। अगर कुर्सी से पहले देश का विचार आया होता तो आज शायद आतंकवाद जैसी बीमारी भी न होती!

आज़ादी के बाद 3 रियासतों ने भारत में मिलने से इंकार कर दिया - जूनागढ़, हैदराबाद और कश्मीर। जूनागढ़ का सुल्तान तो पाकिस्तान भाग गया और हैदराबाद को बलपूर्वक भारत में शामिल कर लिया

गया। अभी कश्मीर के विषय में योजना बन ही रही थी कि पाकिस्तान ने कश्मीर पर हमला कर दिया। कश्मीर के राजा हरि सिंह के पास इतनी सेना नहीं थी कि वे पाकिस्तान का मुकाबला कर पाते। जब उन्होंने भारत से सहायता माँगी तो सरदार पटेल ने उन्हें भारत का हिस्सा बनने की पेशकश शर्त के तौर पर की। 'मरता क्या न करता' को चरितार्थ करते हुए कश्मीर के राजा हरि सिंह ने भारत में विलय के कागजों पर हस्ताक्षर किए। इस घटना के बाद भारत ने अपने सैनिक कश्मीर में उतार दिए। उस समय तक पाकिस्तान की सेना श्रीनगर तक पहुँच चुकी थी। भारतीय सेना उन्हें खदेड़ती हुई लाहौर तक जा पहुँची। उन्होंने भारत के प्रधानमंत्री को सूचित किया कि वे बस 48 घंटे कि मोहलत उन्हें और दें ताकि वे बाकि बचे पाकिस्तान को भारत में मिला दें पर अफ़सोस हमारे प्रधानमंत्री महोदय जवाहर लाल नेहरू जी ने फिर एक गलती कर दी! उन्होंने बिना अपने कैबिनेट की सलाह के रेडियो पर युद्ध विराम का एलान कर दिया और कहा कि जम्मू कश्मीर एक विवादित क्षेत्र है जिसका समाधान संयुक्त राष्ट्र संघ की अगुवाई में ही होगा। इस गलती के दो परिणाम यह हुए कि न चाहते हुए भी अमेरिका कश्मीर के मुद्दे का सरपंच बन गया क्योंकि संयुक्त राष्ट्र संघ का वो दादा है और पाकिस्तान को बखेड़ा खड़ा करने का बहाना मिल गया। अब अमेरिका इस फिराक में है कि भविष्य में यदि चीन के साथ उसका झगड़ा होता है तो मिलिट्री बेस के लिए कश्मीर की धरती से अच्छी जगह और कोई नहीं। यही वजह है कि आज तक कश्मीर का मुद्दा संयुक्त राष्ट्र संघ में ज्यों का त्यों बना हुआ है। वह इसे विवादित क्षेत्र ही रखना चाहता है ताकि यहाँ घुसने के लिए उसे भारत से अनुमति न लेनी पड़े। मानसिक गुलामी का एक अद्भुत उदाहरण थी यह गलती।

एक अन्य गलती हुई हमसे सन 1962 में जब चीन के प्रधानमंत्री भारत दौरे पर आए। 1912 में अंग्रेजों ने चीन से कहा था कि अकसाई चिन का हिस्सा चीन को दिया जा सकता है बशर्ते चीन तिब्बत को एक अलग राष्ट्र के रूप में घोषित करे जिस पर चीन तैयार नहीं हुआ। बाद में अंग्रेजों ने अकसाई चिन भारत में मिला दिया। 1949 में मिली आज़ादी के बाद चीन इस फिराक में बैठा था कि कब वो अकसाई चिन का हिस्सा भारत से हासिल करे। इसके लिए उन्होंने एक चाल चली और भारत के सामने मित्रता का न्यौता पेश किया। साथ ही उन्होंने भारत को भरोसा दिया कि वे भारत पर कभी भी हमला नहीं करेंगे। हमारे चतुर प्रधानमंत्री इन बातों में फँस गए और उन्होंने रक्षा बजेट में भारी कटौती कर दी। हथियारों के निर्माण में कटौती कर दी गई और सैनिकों के वेतन की भी कटौती कर दी गई। भारत-चीन सीमा से कई सैनिक भारत ने वापिस बुला लिए। इस महामूर्खता का लाभ उठाते हुए चीन ने अकस्मात हम पर हमला बोल दिया जिसके प्रतिरोध में हमारे कई हज़ार सैनिक शहीद हो गए। भारत को मुंह की खानी पड़ी! चीन ने 72,000 sq. miles का अकसाई चीन भारत से छीन लिया और हम देखते रह गए। यही नहीं तिब्बत समेत कैलाश मानसरोवर भी चीन के क्षेत्र में चला गया। यही होता है जब अधिकार ग्रहण का कारण राष्ट्र हित न होकर सत्ता की लालसा हो। ये तो

चीन की शराफत थी कि उसने अकसाई चिन से संतोष कर लिया वरना भारत इस स्थिति में भी नहीं था कि खुद को चीन से बचा सके! ऐसी शर्मनाक हार में तब्दील हुई वह मूर्खता!

अब चीन अरुणाचल प्रदेश पर अपना हक जताता है। उसने अपने नक्शे में अरुणाचल प्रदेश को भी शामिल किया हुआ है। हमारी सरकार की दुविधा यह है कि अब वो पूरी ताकत के साथ अरुणाचल प्रदेश की रक्षा में लग गई है। हारे हुए इलाके की तो बात ही दूर!

1965 में पाकिस्तान ने भारत पर हमला कर दिया। भारत की सेना उन्हें खदेड़ती हुई लाहौर तक जा पहुंची। जब पाकिस्तान को एहसास हुआ कि इस तरह तो सारा पाकिस्तान धूल में मिल जाएगा तो वह अमेरिका की शरण में पहुंचा। अमेरिका जानता था कि भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी किसी के बहकावे में आने वाले नहीं हैं, इसीलिए उसने भारत के मित्र राष्ट्र रूस का सहारा लिया। ताशकंद में भारत और पाकिस्तान के बीच एक ऐतिहासिक समझौता हुआ जिसमें भारत ने पाकिस्तान का जीता हुआ हिस्सा उसे वापिस कर दिया। इस यात्रा के दौरान शास्त्री जी को जहर दे कर वहीं मार दिया गया और नीच भारत सरकार ने देश को बताया कि शास्त्री जी का निधन heart attack से हुआ है जबकि अपने दौरे पर रवाना होने से पहले की रिपोर्ट के अनुसार शास्त्री जी पूर्ण स्वस्थ थे। पूरी जानकारी के लिए कृपया दिया गया लिंक सुनें 01:00:00 के आस पास से। इस तरह भारत ने अपने कट्टर शत्रु को माफ़ कर एक और भूल की जिसका परिणाम था सन् 1999 का कारगिल युद्ध।

हमसे सिर्फ कूटनैतिक भूलें ही नहीं हुयीं अपितु आज़ादी के 65 सालों में कई आर्थिक भूलें भी हुई हैं जैसे हमारी मुद्रा का अवमूल्यन। सन् 1966 से पहले भारत का 1 रुपया 1 Sterling Pound तथा एक US dollar के बराबर था। सन् 1966 में अमेरिका के दबाव में आकर भारत सरकार ने रुपए की कीमत 57% गिरा दी। धीरे धीरे यह कीमत गिरती गिरती आज इस मुकाम पर आ पहुंची है कि आज 1 डॉलर 53.85 रुपए के बराबर है। इसका मतलब यह है कि 50 साल पहले यदि भारत ने कोई कर्ज़ 100 रुपए का लिया है तो चुकाते वक्त आज उसकी कीमत 5385 रुपए है। यह सिलसिला अभी भी थमा नहीं है और जब कभी भारत सरकार को धन की आवश्यकता पड़ती है तो वर्ल्ड बैंक रुपए के अवमूल्यन जैसी अपमानजनक शर्तें भारत के सामने रखता है जिसे हम शौक से स्वीकार भी करते हैं!

एक सबसे बड़ा धोखा जो आज़ादी के 65 वर्षों में हमारे साथ हुआ वह था हमारा संविधान। भारत का संविधान विश्व का सबसे बड़ा संविधान है। यह संविधान मात्र 11 महीने और 18 दिनों में बनकर

तैयार हो गया और इसमें से भी इस संविधान को बनाने के लिए दिया गया समय केवल 166 घंटे ही थे। विश्व के सबसे बड़े गणतंत्र को मात्र 166 घंटों में ही लपेट देना पूर्णतया असंभव है! परंतु यह कारनामा हुआ, भारत को लूटने के लिए बनाये गए अंग्रेजों के कानून की पूरी नक़ल करके। Government of India Act (1935), अंग्रेजों द्वारा भारत पर शासन करने के लिए बनाया गया एक कानून था जिसमें 34,735 ऐसे कानून हैं जो हमारी जनता और संसाधनों का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से शोषण करते हैं। राज्य सभा में भीमराव अम्बेडकर जी ने कहा था, “अगर मुझे छूट मिले तो मैं सबसे पहले इस संविधान को जला दूंगा! इसमें एक भी कानून ऐसा नहीं है जो भारत के हित में हो। पर मैं क्या करूँ इतने कम समय में इससे बहतर विकल्प मुझे नज़र नहीं आ रहा था।” इस तरह भारतीय नेताओं ने भी माना कि यह संविधान गुलामी का परिचायक है। आज़ादी के 65 वर्षों में इस संविधान में 94 संशोधन (amendments) हो चुके हैं। इतने संशोधन तो तभी हो सकते हैं अगर किसी चीज़ में कोई खराबी हो, यह बहुत स्पष्ट बात है।

विगत 500 वर्षों की सबसे बड़ी भूल थी East India Company को व्यापार के लिए सन् 1618 में जहाँगीर द्वारा दी गई अनुमति। मुग़ल सम्राट ने जिस भरोसे के साथ उन्हें licence दिया था उसका अंग्रेजों ने पूरा दुरुपयोग किया। उन्होंने अपनी समस्त शक्ति भारत को लूटने में लगा दी। जहाँगीर के बेटे औरंगजेब का अंग्रेजों से सन् 1688 में युद्ध हुआ जिसमें कंपनी बुरी तरह हारी। कंपनी की क्षमा याचना से पिघलकर औरंगजेब ने उनका licence renew कर दिया। यह थी एक और भूल!

महाराष्ट्र के एक साहसी राजा हुए जिनका नाम था जसवंत राव होल्कर। उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ एक रणनीति बनाई जिसमें उन्होंने और भारतीय राजाओं को अपने साथ मिलाकर संगठित होकर अंग्रेजों से युद्ध लड़ने की सोची। ये राजा थे राजस्थान के सीन्दिया वंश से और पंजाब के राजा रणजीत सिंह। अंग्रेजों से युद्ध करने के लिए राजा जसवंत राव की सेना पंजाब पहुंची। इसी बीच अंग्रेजों ने सीन्दिया वंश और महाराजा रणजीत सिंह से एक समझौता कर लिया जिसके तहत वे अंग्रेजों के खिलाफ कोई युद्ध नहीं कर सकते थे। अब युद्ध करने के लिए महाराजा जसवंत राव अकेले रह गए परंतु फिर भी उन्होंने अंग्रेजों को परास्त कर दिया। इसके बाद अंग्रेजों ने रणजीत सिंह की मृत्यु के बाद उनके बेटे दिलीप सिंह को ब्रिटेन भेज कर उसका धर्म परिवर्तन कर ईसाई बना दिया और उसकी माता महारानी जिन्दा कौर को बनारस में दर दर की ठोक़रें खाने के लिए छोड़ दिया। इतना ही नहीं उनके पीछे उन्होंने रणजीत सिंह के खजाने से बेशकीमती कोहिनूर हीरा निकाल कर ब्रिटेन की महारानी के मुकुट पर जड़ दिया। यदि वो भूल रणजीत सिंह ने न की होती तो आज देश का सम्मान भी जीवित रहता और उनका परिवार ऐसे अपमानित जीवन जीने का भागी न बनता।

इसी तरह यदि आप इतिहास उठा कर देखें और उसका विश्लेषण करें तो आपको पता चलेगा कि न जाने ऐसी कितनी गलतियाँ हम हर शताब्दी में करते आए हैं। इन भूलों से हमें सीख लेनी होगी तभी हम अपने देश को स्वावलंबी बना सकेंगे।

जय भारत!